5

एडम स्मिथ
[ADAM SMITH]

प्रारम्भिक

प्रतिष्ठित विचारधारा ब्रिटेन में प्रारम्भ हुई और इसके प्रारम्भ की तिथि सन् 1776 मानी जाती है, जबकि एडम स्मिथ का ग्रन्थ '**राष्ट्रों की सम्पत्ति**' (*Wealth of Nations*) प्रकाशित हुआ।

सामाजिक व्यवस्था में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन अर्थात् औद्योगिक क्रान्ति का सूत्रपात हो चुका था। इस पृष्ठभूमि में एडम स्मिथ का ग्रन्थ '**राष्ट्रों की सम्पत्ति**' (*Wealth of Nations*) प्रकाशित हुआ। इसका पूरा नाम '*An Inquiry into the Nature and Causes of the Wealth of Nations*' था।

एडम स्मिथ को प्रभावित करने वाले स्रोत

एडम स्मिथ पर उस समय की प्रचलित विचारधाराओं का पर्याप्त प्रभाव पड़ा था। उनको प्रभावित करने वाले विचारकों में प्रमुख हैं—प्रो. फ्रांसिस हैचसन, डेविड ह्यूम, बर्नार्ड, मैडिबिली, केने तथा अन्य प्रकृतिवादी विचारक इसके अतिरिक्त वह जोशिया टकर के मुक्त व्यापार सम्बन्धी विचार तथा हैरिस के मुद्रा (Coins) नामक ग्रन्थ जो 1757 में प्रकाशित हुआ था, से भी प्रभावित हुए थे।

एडम स्मिथ : अर्थशास्त्र के जनक

एडम स्मिथ को आधुनिक अर्थशास्त्र का संस्थापक मानने के कारणों को संक्षेप में इस प्रकार लिखा जा सकता है :

(1) उन्होंने अर्थशास्त्र का एक शुद्ध विज्ञान (Positive Science) का रूप प्रदान किया। उससे पूर्व के अधिकांश लेखकों के विचार वैज्ञानिक ढंग पर नहीं थे अधिकतर नैतिक या नीति सम्बन्धी थे। स्मिथ ने अर्थशास्त्र से अवैज्ञानिक तत्वों को दूर किया।

(2) उन्होंने परस्पर विरोधी विचारों में समन्वय किया। प्रकृतिवाद और वणिकवाद की विरोधी विचारधाराओं में जो सही था उसे अपने अर्थशास्त्र में रखा। इसी प्रकार ह्यूम, कैण्टीलोन, विलियम पैटी, कैने, आदि के विचारों को एक तर्कसंगत आधार प्रदान किया।

(3) स्मिथ ने अधिकांश आधुनिक सिद्धान्तों का वर्णन किया है। आधुनिक सिद्धान्तों का मूल हम उनके ग्रन्थों में पाते हैं यह और बात है कि उसकी विस्तृत व्याख्या वे नहीं कर सके।

(4) स्मिथ समाजवादी आर्थिक सिद्धान्तों के भी जनक थे। मूल्य का श्रम सिद्धान्त सर्वप्रथम उन्होंने ही व्यवस्थित किया था जिसे बाद में रिकार्डो और फिर कार्ल मार्क्स ने विकसित करके समाजवाद का आधार बनाया।

(5) स्मिथ का प्रभाव अत्यन्त व्यापक था। न केवल प्रतिष्ठित अर्थशास्त्री बल्कि बाद के अधिकांश अर्थशास्त्री स्मिथ के प्रभाव से मुक्त नहीं हैं। उनके विरोधी भी उनके महत्व को स्वीकार करते हैं।

Scanned by PDF Scanner

एडम स्मिथ के आर्थिक विचार
(ECONOMIC IDEAS OF ADAM SMITH)

1. श्रम विभाजन
(DIVISION OF LABOUR)

एडम स्मिथ से पूर्व के विचारकों-वणिकवादियों तथा प्रकृतिवादियों ने क्रमशः धातु (Money) और भूमि (Land) को ही उत्पत्ति के लिए आवश्यक साधन बताया था। इसी कारण से वणिकवादियों ने उपभोग एवं उत्पत्ति के नियंत्रण, अनुकूल व्यापार सन्तुलन का विचार प्रस्तुत किया था, जिससे कि अधिकतम मात्रा में देश बहुमूल्य धातुएं—सोना एवं चांदी को हस्तगत कर समृद्ध एवं वैभव सम्पन्न हो सके। इसी प्रकार कृषि-उद्योग को अधिक महत्व प्रदान करने वाले प्रकृतिवादियों ने उन विचारों को प्रस्तुत किया जिनके द्वारा देश अधिकतम कृषि-उत्पादन बढ़ाकर सम्पन्न बन सकता था। प्रकृतिवादी प्रसिद्ध विचारक डॉ. क्वेने ने तो यहां तक कह दिया कि सभी प्रकार की सम्पत्तियों का, चाहे वह व्यक्तिगत हों अथवा राज्य की, कृषि ही एकमात्र स्रोत है। **एडम-स्मिथ ने इनके विपरीत श्रम को अधिक महत्व प्रदान किया और उसने बताया कि न तो धातु ही और न कृषि ही सम्पत्ति का साधन है वरन् श्रम** (Labour) **सम्पत्ति का साधन है।** एडम-स्मिथ ने बताया "**प्रत्येक राष्ट्र का वार्षिक श्रम एक कोष है जो मौलिक रूप से उसे (राष्ट्र को) सभी आवश्यकताओं तथा सुविधाओं की पूर्ति करता है जिन्हें वह वर्ष पर्यन्त उपभोग करता है और जिसमें या तो सदैव उसी श्रम का तत्कालिक या अन्य राष्ट्रों से उस उत्पादन से जो कुछ क्रय किया जाता है, सम्मिलित रहता है।**"

एडम-स्मिथ ने वणिकवादी एवं प्रकृतिवादी विचारकों के विचारों को खण्डित करते हुए बताया कि राष्ट्र के सभी वर्ग जो कार्य करते हैं, उत्पादक होते हैं। उनके मतानुसार चाहे श्रमिक कृषक हो या व्यापारी या अन्य कार्य करता हो उन सबका श्रम उत्पादक है। इस प्रकार उन्होंने यह सिद्ध कर दिया कि उत्पादक एवं अनुत्पादक वर्गों में भेद करना व्यर्थ है।

इस प्रकार देखते हैं कि एडम-स्मिथ ने दो निष्कर्ष दिए—(1) सभी श्रम उत्पादक होता है उसे उत्पादक एवं अनुत्पादक वर्गों में विभाजित नहीं किया जा सकता और (2) सभी के सहयोग से उत्पादन होता है।

श्रम-विभाजन का अर्थ

एडम-स्मिथ के मतानुसार श्रम-विभाजन सामाजिक अथवा सामूहिक सहयोग की प्रणाली है जिसके द्वारा उत्पादन कार्य सम्पन्न होता है। इस प्रणाली के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति या वर्ग अन्य व्यक्तियों तथा वर्गों के साथ मिलकर कार्य करता है। पशु-समाज में तो पशु का बच्चा बड़ा होकर पूर्ण रूप से स्वतंत्र हो जाता है, परन्तु मनुष्य समाज में यह सम्भव नहीं है। यहां पर तो सामाजिक सहयोग द्वारा वस्तुएं उत्पन्न की जाती हैं तथा विनिमय द्वारा एक-दूसरे की आवश्यकता पूर्ति में प्रयुक्त की जाती है। इस पारस्परिक सहयोग से राष्ट्रीय आय (National Dividend) का सृजन होता है जो कि राष्ट्र के निवासियों के कल्याण में योग प्रदान करता है।

श्रम-विभाजन से लाभ

श्रम-विभाजन द्वारा होने वाले लाभ को एडम-स्मिथ ने 'पिन बनाने के व्यवसाय का उदाहरण देकर स्पष्ट किया है।' उन्होंने इस उदाहरण द्वारा यह सिद्ध किया है कि वह व्यक्ति जो बिना श्रम-विभाजन प्रणाली को अपनाए पिन बनाने का कार्य करता है एक निश्चित समय में केवल एक ही पिन बना पाएगा, परन्तु जब वह श्रम-विभाजन प्रणाली को अपनाता है तो उतने समय में 240 पिन बना सकता है। इसके अतिरिक्त एडम-स्मिथ ने श्रम-विभाजन प्रणाली के अन्य लाभ बताए हैं, जो निम्नलिखित हैं :

(i) श्रमिकों की क्षमता में वृद्धि, (ii) समय की बचत, (iii) आविष्कारों को प्रोत्साहन, (iv) उत्पादन में वृद्धि।

श्रम-विभाजन से हानियां

कुछ विद्वानों का मत था कि एडम स्मिथ ने श्रम-विभाजन के केवल लाभ ही बताए हैं और उन्होंने उससे होने वाली हानियों का वर्णन नहीं किया है। परन्तु यह विचार पूर्ण-रूपेण ठीक नहीं है। लाभों को बताने के साथ-ही-साथ उन्होंने उससे उत्पन्न होने वाली हानियों की ओर भी संकेत किया है। उनके अनुसार इस प्रणाली में दो प्रकार की हानियों की सम्भावना की जा सकती है जो अग्रलिखित है :

Scanned by PDF Scanner

(1) **मानसिक नीरसता बढ़ती है**—यह स्वाभाविक ही है कि एक ही प्रकार के कार्य को करते रहने से उस व्यक्ति के लिए वह कार्य नीरस हो जाता है। यह सम्भावना है कि प्रारम्भ में कुछ समय तक उसे यह काम अच्छा लगे पर थोड़े समय के उपरान्त बार-बार उसी कार्य को करने से उसके प्रति नीरसता निश्चय ही बढ़ जाएगी।

(2) **श्रम की गतिशीलता में बाधा पड़ती है**—किसी एक ही कार्य को बहुत समय तक करते रहने से वह व्यक्ति उस कार्य में तो कुशलता प्राप्त कर लेता है, परन्तु अन्य कार्य करने में असमर्थ सिद्ध होता है। इसका परिणाम यह है कि वह एक पेशा अथवा एक ही पेशा की एक विधि को छोड़कर अन्य पेशे को कुशलता से करने में असमर्थ रहेगा।

श्रम-विभाजन की सीमाएं (Limitations of Division of Labour)

उपर्युक्त वर्णित श्रम-विभाजन का वर्णन करने के पश्चात् एडम स्मिथ ने उसकी सीमाओं पर प्रकाश डाला है। उन्होंने श्रम-विभाजन की दो सीमाएं बताई हैं :

(1) **बाजार का विस्तार** (Extent of the Market)—एडम स्मिथ का कथन है कि **श्रम-विभाजन बाजार के विस्तार पर निर्भर करता है। यदि किसी वस्तु का बाजार संकीर्ण अथवा छोटा होता है तो उस वस्तु का विनिमय क्षेत्र भी छोटा होगा। दूसरे शब्दों में, उस वस्तु की मांग भी कम होगी, अतः ऐसी वस्तु का उत्पादन भी सीमित-मात्रा में किया जाएगा, क्योंकि उत्पादन बड़ी मात्रा में किया जाएगा तो उस पर व्यय किया हुआ श्रम व्यर्थ जाएगा। इसी दृष्टिकोण को रखते हुए एडम-स्मिथ ने उपनिवेशों की खोज तथा विदेशी व्यापार पर पर्याप्त बल दिया है।**

(2) **प्राप्त पूंजी की मात्रा** (The quantity of capital available)—एडम स्मिथ ने दूसरी महत्वपूर्ण सीमा प्राप्त पूंजी की मात्रा बताई है। उनके मतानुसार पूंजी का कम मात्रा में होना उत्पादन में कमी करने के रूप में प्रगट होगा जिससे कि श्रम-विभाजन भी कम ही सम्भव होगा। इसके विपरीत जितनी ही अधिक मात्रा में पूंजी उपलब्ध होगी उतनी ही अधिक मात्रा में उत्पादन बढ़ेगा तथा श्रम-विभाजन अधिक विकसित होगा।

स्मिथ का यह विचार इतना स्पष्ट नहीं है जितना की बाजार के विस्तार का। यही कारण है कि प्रसिद्ध अर्थशास्त्री कैनन (Cannon) ने इस मत का खण्डन किया है। कैनन ने बताया कि यह बात किसी व्यक्ति के साथ लागू हो सकती है कि यदि उसके पास अधिक पूंजी हो तो वह विशिष्ट श्रम-विभाजन का आकार बढ़ा सकता है। परन्तु **यदि सम्पूर्ण उद्योग या समाज को लिया जाए तो यह विचार अशुद्ध एवं असत्य सिद्ध होता है, क्योंकि ऐसी परिस्थिति में इस श्रम-विभाजन के सहारे कम पूंजी लगाकर अधिक उत्पादन किया जा सकता है। इस प्रकार कैनन के मतानुसार श्रम-विभाजन से पूंजी की बचत होती है।**

2. प्रकृतिवाद (सहजवाद) तथा आशावाद
(NATURALISM AND OPTIMISM)

प्रो. जीड और प्रो. रिस्ट (Prof. Gide and Prof. Rist) के मतानुसार स्मिथ में श्रम-विभाजन के अतिरिक्त 'प्रकृतिवाद' तथा 'आशावाद' नामक दो अन्य मौलिक विचार भी मिलते हैं। इन दोनों के ऊपर ही अधिकतर उनके सिद्धान्त आधारित हैं। 'Wealth of Nations' में ये दोनों विचार कहीं एक साथ और कहीं बिखरे रूप में दिखाई पड़ते हैं।

स्मिथ का प्रकृतिवाद (Naturalism of Smith)

एडम-स्मिथ का कथन है कि आर्थिक-संस्थाओं (Economic-Institutions) **का जन्म और विकास अपने स्वाभाविक अथवा प्राकृतिक रूप में हुआ है, जिनके निर्माण के लिए किसी प्रकार की योजना, बाहरी सहायता, बल प्रयोग एवं नियमों की आवश्यकता नहीं पड़ी है।** यहां पर वह प्रकृतिवादियों से अधिक सहमत दिखाई पड़ते हैं। उनका मत है कि वर्तमान आर्थिक-स्थिति लाखों व्यक्तियों के अलग-अलग आकस्मिक (Spontaneous) कार्यों का परिणाम है। क्योंकि मनुष्य के अन्दर निजी-हित (Self-Interest) की महती भावना होती है और वह अपनी इसी भावना से प्रेरित होकर अपने विभिन्न कार्यों को सम्पन्न करता है, साथ ही आर्थिक प्रयत्न भी किया करता है। परन्तु जब समस्त व्यक्तियों की इन प्रवृत्तियों का मेल हो जाता है तब आर्थिक संस्थाओं (Economic-Institutions) का जन्म एवं विकास होता है। इसी को वह प्रकृतिवाद (Naturalism) कहते हैं।

Scanned by PDF Scanner

स्मिथ का आर्थिक-संस्थाओं के स्वतः जन्म का विचार उसके ग्रन्थ "*Wealth of Nations*" में विद्यमान है। बहुत बड़ी संख्या में इस प्रकृतिवाद के उदाहरण हमें "*Wealth of Nations*" में दिखाई पड़ते हैं। उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

(1) **श्रम-विभाजन** (Division of Labour)—एडम स्मिथ का विचार है कि समस्त उत्पादक क्रियाओं में छाया **श्रम-विभाजन किसी भी प्रकार की पूर्व योजना का परिणाम नहीं है बल्कि वह मनुष्य की निजी स्वार्थ अथवा हित** (Self-Interest) **की प्रवृत्ति की देन है।** इसी बात के समर्थन में उन्होंने बताया है कि कसाई, शराब खींचने वाला या नानबाई की उदारता से हमें भोजन नहीं मिलता है वरन् उसके निजी स्वार्थ द्वारा ऐसा सम्भव होता है। ...... हम अपने आपको उनकी मानवता की ओर सम्बोधित नहीं करते वरन् उनके निजी स्वार्थ को।

इसी हित पूर्ति की भावना ने धीरे-धीरे श्रम-विभाजन को जन्म दिया है। **स्वार्थवश ही मनुष्य उत्पादित वस्तुओं का विनिमय करता है। प्रत्येक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों को अपनी उत्पादित वस्तु इसी आशा से देता है कि बदले में उसको स्वयं उसकी हित की वस्तु मिल जाएगी।** दूसरे सभी आवश्यकता की वस्तुओं को व्यक्ति स्वयं निर्मित नहीं कर सकता है। अतः उसे आवश्यकता की पूर्ति के लिए विनिमय का सहारा लेना पड़ता है। जब विनिमय का सूत्र-पात हुआ तो धीरे-धीरे बाजारों का विस्तार भी बढ़ा तथा स्वाभाविक रूप से ही श्रम-विभाजन का उदय हो गया।

इस प्रकार स्पष्ट है कि निजी हित के हेतु विभिन्न व्यक्तियों द्वारा की गई आर्थिक क्रियाओं का स्वेच्छानुरूप परिणाम ही श्रम-विभाजन का रूप है।

(2) **द्रव्य** (Money)—एडम स्मिथ के अनुसार श्रम-विभाजन की भांति ही आर्थिक संस्था द्रव्य का भी उदय हुआ है। **यह किसी सामूहिक योजना अथवा सरकार द्वारा संचालित किसी आयोजन का परिणाम नहीं है। यह तो प्रत्येक व्यक्ति के निजी स्वार्थ के हेतु उनकी सामूहिक इच्छा का परिणाम है।** जब मनुष्यों को वस्तु-विनिमय की कठिनाइयों का अनुभव होने लगा तब बुद्धिमान लोगों ने अपनी अदल-बदल की कठिनाइयों को कम करने के लिए यह सोचा कि अपनी उत्पादित वस्तु के अतिरिक्त भी किसी ऐसी वस्तु को रखना चाहिए जिसे लोग अपनी वस्तु के बदले में लेने को तैयार हो जाए। इस सर्वमान्यता के गुण पर ही द्रव्य का जन्म हुआ है। इस प्रकार स्पष्ट है कि द्रव्य अनेक व्यक्तियों के कार्यों का परिणाम है। इस क्षेत्र में सरकार का हस्तक्षेप तो बहुत बाद में हुआ है।

(3) **पूंजी** (Capital)—स्मिथ के अनुसार पूंजी भी स्वेच्छानुरूप संस्था है। **अपनी आर्थिक दशा सुधारने के लिए ही व्यक्तियों ने संचय** (Saving) **प्रारम्भ किया होगा जिसमें कि उनका व्यक्तिगत स्वार्थ निहित है।** पूंजी संचय का परिणाम है और संचय की प्रवृत्ति प्राकृतिक है।

(4) **मांग और पूर्ति** (Demand and Supply)—बाजार में किसी **वस्तु की मांग और पूर्ति का सन्तुलन** (Equilibrium) **भी स्वेच्छानुरूप एवं प्राकृतिक है। यहां पर निजी-हित का ही सिद्धान्त क्रियाशील होता है।** जब बाजार में किसी वस्तु की पूर्ति मांग से अधिक बढ़ जाती है तब कीमत भी घट जाती है। वस्तु की कीमत कम होने से स्पष्ट है कि लोगों (उत्पादकों) के निजी स्वार्थ को ठेस लगेगी अर्थात् उन्हें हानि उठानी पड़ेगी। यह बात स्वाभाविक है कि ये उत्पादक वर्ग निरन्तर हानि उठाते हुए भी उत्पादन करने में तत्पर नहीं रहेंगे। परिणाम यह होगा कि यह उत्पादक या तो उत्पादन को कम कर देंगे या अन्य वस्तु के उत्पादन में जुट जाएंगे। उन लोगों की इस क्रिया की यह प्रतिक्रिया होगी कि या तो पूर्ति मांग के बराबर हो जाएगी या पूर्ति मांग से नीची हो जाएगी जिसके परिणामस्वरूप वस्तु की कीमत पुनः बढ़ जाएगी जिससे कि उत्पादन के साधनों को लाभ होगा और उनके निजी हितों की रक्षा सम्भव हो सकेगी। अधिकतम लाभ प्राप्त करने के लिए पुनः वस्तु की पूर्ति बढ़ाई जाएगी फिर मूल्य गिरेगा और इस प्रकार व्यक्तियों के निजी स्वार्थ के कारण मांग पूर्ति में परिवर्तन चलता रहेगा। निजी हित के सिद्धान्त के अनुसार उत्पादक व्यय तथा उसका मूल्य बराबर होते रहते हैं। यह स्पष्ट है कि इस मांग पूर्ति के सिद्धान्त में व्यक्तिगत हित ही सक्रिय कार्य करता है।

(5) **जनसंख्या** (Population)—**एडम स्मिथ का विचार था कि किसी देश की जनसंख्या को किसी निर्मित योजना द्वारा नियंत्रित तथा आयोजित नहीं किया जाता है।** जिस प्रकार उक्त वर्णित बातें स्वमेव प्राकृतिक आधार पर हो जाती हैं उसी प्रकार यह भी स्वयं तय हो जाती है। **वस्तु के दृष्टिकोण से ही स्मिथ ने जनसंख्या को**

Scanned by PDF Scanner

देखा है। यदि देश के प्राकृतिक साधनों की अपेक्षा जनसंख्या अधिक है तो परिणाम यह होगा कि उनको मजदूरी कम मिलेगी। मजदूरी कम मिलने के कारण उनके निजी स्वार्थों को ठेस लगेगी जिसके कारण उन्हें अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। भुखमरी, गरीबी, अकालमृत्यु, बीमारी, युद्ध आदि सम्पन्न होंगे तथा मृत्यु दर ऊंची हो जाएगी। मृत्यु दर के ऊंचा होने का परिणाम यह होगा कि जनसंख्या घट कर मांग के बराबर अर्थात् देश के प्राकृतिक साधनों के अनुरूप हो जाएगी। इसके विपरीत यदि किसी देश में वांछित जनसंख्या से उसकी पूर्ति कम है तो यह बातें अपने विपरीत रूप में प्रगट होगी, मजदूरी बढ़ जाएगी, रहन-सहन का स्तर ऊंचा हो जाएगा तथा मृत्युदर घट जाएगी। परिणामस्वरूप जनसंख्या में अभिवृद्धि होगी और थोड़े समय के उपरान्त मांग और पूर्ति बराबर हो जाएगी।

(6) **द्रव्य की मांग और पूर्ति** (Demand and Supply of money)—द्रव्य की मांग और पूर्ति का साम्य भी निजी स्वार्थ की प्रेरणा पर स्वमेव स्वाभाविक रूप से सम्पन्न हो जाता है। यदि द्रव्य चलन में मांग से अधिक है तो इसका परिणाम यह होगा कि या तो व्यक्ति संचय करने लगेंगे, या उसे विदेशों में उद्योगों आदि के रूप में लगा देंगे या वस्तुओं का आयात अधिक करने लगेंगे। जिसका परिणाम यह होगा कि द्रव्य की पूर्ति मांग के बराबर हो जाएगी। इसी प्रकार यदि द्रव्य चलन में मांग से कम होगा तो सम्पूर्ण प्रतिक्रिया पहली के विपरीत दिशा में होगी।

स्मिथ का आशावाद (Optimism of Smith)

स्मिथ ने प्रकृतिवाद को आशावाद से जोड़ दिया है। यहां पर स्मिथ पर 18वीं शताब्दी की इस विचारधारा 'जो वस्तु प्राकृतिक अथवा आकस्मिक रूप से सम्पन्न हो, जाए वह लोकहित तथा न्याय से पूर्ण है' का प्रभाव पड़ा है। उन्होंने अत्यन्त दृढ़ता के साथ यह विश्वास किया है कि आर्थिक संस्थाओं (Economic-Institutions) का ध्येय मनुष्य समाज का कल्याण करना है। ये संस्थाएं विभिन्न प्रकार से मनुष्यों की सेवा करती हैं। इन से प्राप्त सेवाओं और कल्याण में घनिष्ट सम्बन्ध है। जिस देश में ये आर्थिक संस्थाएं कम होंगी वह देश कभी सूखी, समृद्ध एवं वैभव सम्पन्न नहीं हो सकता। यह बात एडम स्मिथ द्वारा बातए गए श्रम-विभाजन, पूंजी, द्रव्य आदि आर्थिक संस्थाओं के बताए लाभों द्वारा स्पष्ट होती है।

अब देखना यह है कि इन आर्थिक संस्थाओं से लोक हित एवं कल्याण किस प्रकार सम्भव होता है :

(1) **श्रम-विभाजन**—इससे उत्पादन बढ़ता है, बेरोजगारी दूर होती है, मनुष्यों की आर्थिक दशा में सुधार होता है जिसके परिणामस्वरूप उनका रहन-सहन का दर्जा ऊंचा होता है। ये सभी परिणाम समाज-हित में है।

(2) **द्रव्य**—वस्तु की अदल-बदल की प्रणाली में जो कठिनाइयां उपस्थित हो गई थीं वह द्रव्य द्वारा ही दूर हुई है। **द्रव्य के जन्म ने वस्तु-विनिमय की कठिनाइयां को दूर करने के साथ-ही-साथ बाजारों का बिस्तार किया, लोगों को उच्च जीवन स्तर पर खड़ा किया है।** इसी प्रकार द्रव्य से मानव-समाज को अनेक लाभ हुए हैं।

(3) **जनसंख्या—जब एक देश की जनसंख्या प्राकृतिक साधनों के अनुरूप घटती बढ़ती है तो यह बात उस देश के निवासियों के हित में ही होती है।** इसका परिणाम यह होता है कि श्रमिकों को उचित वेतन प्राप्त होता रहता है, जो कि उनके सुखी जीवन के लिए परमावश्यक है। इसके विपरीत यदि जनसंख्या प्राकृतिक साधनों के अनुरूप अपना संकुचन एवं विस्तार नहीं करेगी तो श्रमिक को वेतन उचित मात्रा में नहीं मिल पाएगा जिसका परिणाम उसके दु:खपूर्ण जीवन में मुखर होगा।

(4) **मांग और पूर्ति का सन्तुलन—मांग पूर्ति के सन्तुलन द्वारा तय होने वाला वस्तु मूल्य पूर्ण रूपेण न्यायपूर्ण होता है।** यदि मांग-पूर्ति के सन्तुलन तय न हों तो उपभोक्ता अथवा उत्पादक दोनों में से निश्चय ही किसी न किसी वर्ग को हानि उठानी पड़ेगी।

Scanned by PDF Scanner

3. आर्थिक स्वतन्त्रता तथा स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार
(ECONOMIC LIBERTY AND FREE-TRADE)

आर्थिक स्वतन्त्रता

प्रकृतिवाद तथा आशावाद (Naturalism and Optimism) के सिद्धान्तों की स्थापना करने के बाद यह स्वभाविक था कि **एडम स्मिथ आर्थिक स्वतन्त्रता के पक्ष तथा सरकारी हस्तक्षेप** (State Intervention) **के विरुद्ध अपनी आवाज उठाते। वैसे तो प्रकृतिवादियों का भी यही मत था कि आर्थिक मामलों में राज्य को हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए परन्तु स्मिथ ने इस विचार को अत्यन्त विस्तृत तथा वैज्ञानिक रूप प्रदान किया है।**

एडम स्मिथ ने इस बात को सिद्ध करने का भरसक प्रयत्न किया है कि आर्थिक प्रयत्नों में सरकार अयोग्य है। वह हस्तक्षेप न करने की नीति (*Laissez Faire*) का पक्का समर्थक था। उसने सरकार की हस्तक्षेप की नीति के विरुद्ध तथा आर्थिक स्वतन्त्रता के पक्ष में अनेक स्थानों पर आवाज उठाई है।

सरकार के कार्य

सरकारी हस्तक्षेप के विषय में उक्त वर्णित तर्क देने के पश्चात भी एडम स्मिथ ने निम्नलिखित कार्यों को सरकार द्वारा किया जाने का सुझाव दिया है :

(1) राष्ट्र या समाज की बाह्य राष्ट्र अथवा समाज के आक्रमण से रक्षा करना।

(2) समाज के प्रत्येक सदस्य की अत्याचारों अथवा शोषण से रक्षा करना दूसरे शब्दों में न्याय करना।

(3) जन-हित कार्यों को करना जिन्हें व्यक्ति व्यक्तिगत स्वार्थ द्वारा सम्पन्न नहीं करते हैं। इस प्रकार के कार्य सड़कें, नहरें, बन्दरगाह, शिक्षा-संस्थाएं, बैंक आदि हो सकते हैं।

स्मिथ ने यह भी राय दी है कि उपर्युक्त कार्यों को जहां तक सम्भव हो सके उन्हीं लोगों को सम्पन्न करना चाहिए जो व्यक्तिगत स्वार्थ से प्रेरित होकर कार्य करते हैं। सरकार यह देखे कि कार्य सुचारू रूप से हो भी रहा है अथवा नहीं। उपर्युक्त कार्यों के करने के अतिरिक्त सरकार ब्याज की दर के निर्धारण, बैंकिंग प्रणाली, शिक्षा तथा श्रमिक और मालिकों के सम्बन्ध में हस्तक्षेप भी कर सकती है।

स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार (Free Trade)

वणिकवादियों ने विदेशी व्यापार को नियंत्रण में रखने के लिए संरक्षण (Protection) का प्रयोग किया था परन्तु कृषि की उन्नति चाहने वाले प्रकृतिवादियों ने विदेशी-व्यापार को बहुत ही कम महत्व प्रदान किया था। परन्तु एडम स्मिथ ने देश की उन्नति के लिए स्वतन्त्र-विदेशी-व्यापार पर बहुत बल दिया है। स्मिथ का आर्थिक स्वतन्त्रता सम्बन्धी सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के क्षेत्र में अधिक मुखर हुआ है। इस प्रकार वे प्रकृतिवादियों के संतुलित-व्यापार के सिद्धान्त को और भी स्पष्ट एवं संतोषजनक रूप में हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं।

स्मिथ के अनुसार स्वतंत्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार से निम्नलिखित लाभ होते हैं :

(1) आवश्यकता से अधिक उत्पादन समाप्त हो जाता है।

(2) वस्तुओं के बाजारों का विस्तार होता है।

(3) उत्पादन में वृद्धि होती है।

(4) उपभोक्ताओं को सन्तुष्टि एवं सुख की प्राप्ति होती है।

स्वतन्त्र व्यापार के अपवाद

यद्यपि एडम स्मिथ स्वतन्त्र अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के पक्ष में थे और उन्होंने उसकी पुष्टि में कई तर्क भी प्रस्तुत किए हैं परन्तु फिर भी कुछ ऐसी परिस्थितियों को भी समझा जहां पर उन्होंने संरक्षण की नीति का समर्थन किया है। उन्होंने निम्नलिखित परिस्थितियों में संरक्षण तथा सरकारी नियंत्रण को स्वीकार किया है :

(1) यदि देश आत्मनिर्भरता प्राप्त करना चाहता है तो यह आयातों पर कर लगा सकता है।

(2) राष्ट्रीय जहाजों का प्रयोग हो।

(3) यदि कोई देश वस्तुओं पर आयात कर लगा रहा है तो उसे उस देश की वस्तुओं पर भी कर लगाना चाहिए।

(4) यदि संरक्षण से देश का रोजगार स्तर ऊंचा उठ गया हो।

(5) जिन वस्तुओं का उपभोग देश के लिए आवश्यक है उन पर निर्यात कर लगाना चाहिए।

Scanned by PDF Scanner

4. मूल्य का सिद्धान्त
(THEORY OF VALUE)

प्रकृतिवादियों के समान स्मिथ ने दो प्रकार के मूल्य स्वीकार किये : एक तो उपयोग-मूल्य (Value in use) और दूसरा **विनिमय-मूल्य** (Value in exchange)। **उपयोग मूल्य** को आजकल उपयोगिता कहा जाता है। पानी तथा हवा में इस प्रकार का मूल्य पाया जाता है। दूसरा विनिमय मूल्य प्रथम से भिन्न है। स्मिथ ने लिखा है, "वे वस्तुएं जिनमें बहुत उपयोग मूल्य होता है बहुआ उससें विनिमय मूल्य बहुत कम होता है अथवा बिल्कुल नहीं होता। इसके विपरीत बहुत विनिमय मूल्य रखने वाली वस्तुओं (जैसे हीरे) में बहुत कम या शून्य उपयोग मूल्य होता है।"

विनिमय मूल्य ही असल आर्थिक मूल्य है। इसकी परिभाषा उन्होंने, "अन्य वस्तुओं को खरीदने की शक्ति" कहकर दी है।

उनका प्रारम्भिक मूल्य का सिद्धान्त श्रम पर आधारित है और इसे **मूल्य का श्रम सिद्धान्त** (Labour Theory of Value) कहा जाता है, जिसको संशोधित करके कार्ल मार्क्स ने स्वीकार किया है।

5. वितरण का सिद्धान्त
(THEORY OF DISTRIBUTION)

स्मिथ के अनुसार मूल्य, लगान, मजदूरी और लाभ (या ब्याज) के योग द्वारा निर्मित होता है।

वितरण के सम्बन्ध में स्मिथ के विचार स्पष्ट नहीं हैं। साथ ही अधिकांश विचारों को प्रकृतिवादियों तथा अन्य लेखकों से प्राप्त किया गया है। खास तौर से कैण्टीलोन (Cantillon) का काफी प्रभाव स्मिथ पर दिखायी देता है। परन्तु स्मिथ ने जो भी विचार व्यक्त किये हैं, उन्होंने वितरण के सिद्धान्तों के विकास में बड़ी सहायता दी है।

6. कर के सिद्धान्त
(PRINCIPALES OF TAXATION)

स्मिथ ने शासन की आय के दो स्रोत माने हैं—एक तो शासन की सम्पत्ति, भूमि तथा पूंजी द्वारा होने वाली आय और दूसरा कर (Taxes)। उन्होंने करारोपण के चार सिद्धान्त बताये जो आज तक स्वीकृत हैं। ये सिद्धान्त निम्नलिखित हैं :

(1) **समानता** (Equality) अर्थात् कर व्यक्ति की क्षमता का ध्यान करके लगाना चाहिए तथा सभी पर कर का बोझ समान होना चाहिए।

(2) **निश्चितता** (Certainty) अर्थात् कर की मात्रा निश्चित होनी चाहिए।

(3) **सुविधा** (Conveniet) अर्थात् कर की वसूली सुविधाजनक ढंग से होनी चाहिए।

(4) **मितव्ययता** (Economy) अर्थात् कर वसूल करने का व्यय कम होना चाहिए।

तब से इन सिद्धान्तों में अन्य कई सिद्धान्त भी जुड़ गये हैं, परन्तु स्मिथ के चार सिद्धान्त अभी भी प्रचलित हैं। यहां यह बताना आवश्यक है कि काफी समय पूर्व वणिकवादियों ने भी कर के सिद्धान्त बताये थे। उदाहरण के लिए जस्टी (Justi) ने इनका वर्णन किया था। एडम फर्गूसन ने भी करारोपण के सिद्धान्तों का वर्णन किया है।

7. पूंजी का सिद्धान्त
(THEORY OF CAPITAL)

यद्यपि एडम स्मिथ ने श्रम को ही उत्पादन का महत्वपूर्ण साधन माना है, परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नहीं है कि उन्होंने पूंजी की अवहेलना की है। **उन्होंने पूंजी को ही उत्पादन का अत्यंत ही महत्वपूर्ण क्रियात्मक साधन माना है।** उनके इन शब्दों **श्रम-विभाजन उपलब्ध पूंजी की मात्रा पर बहुत कुछ निर्भर करता है।** उनके द्वारा पूंजी सम्बन्धी महत्व पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। स्मिथ ने पूंजी के उदय, कार्य एवं भेद आदि पर अपने दृष्टिकोण से प्रकाश डाला है जो संक्षेप में निम्नलिखित है :

पूंजी के उदय के विषम में वह कहते हैं कि **प्रत्येक ब्यक्ति अपनी स्वार्थ साधना में लीन है और वह अपने हित की रक्षा के लिए ही धन का संचय करता है। यह विभिन्न ब्यक्तियों द्वारा संचित राशि ही एकत्रित होकर पूंजी**

Scanned by PDF Scanner

की मात्रा की वृद्धि करती है। इस प्रकार स्मिथ के मतानुसार, **पूंजी की मात्रा मनुष्य की स्वाभाविक संचय की मनोवृति पर आधारित है।**

पूंजी के क्या कार्य हैं इनका उल्लेख इस प्रकार से उन्होंने अपनी पूंजी की परिभाषा में ही दे दिया है। **उनका कथन है कि पूंजी व्यक्ति या समाज के संचित कोष का वह भाग है जो उत्पादन में सक्रिय भाग लेता है।** पर किन-किन रूप में लेता है? इस प्रश्न के उत्तर में उन्होंने बताया है कि इसका प्रयोग-कृषि, उद्योग-धन्धों तथा व्यापार आदि में किया जाता है।

एडम स्मिथ ने पूंजी को दो वर्गों में विभाजित किया है—(1) **अचल पूंजी** (Fixed Capital) और (2) **चल पूंजी** (Circulating Capital)। अचल पूंजी से उनका अभिप्राय: उस पूंजी से था जो कि हस्तान्तरित (Transfer) नहीं की जा सकती। मकान इसका श्रेष्ठ उदाहरण है। दूसरी ओर वह पूंजी जो हस्तांतरित की जा सकती है, वह चल पूंजी कह कर पुकारी गई है। कच्चा-पक्का माल, द्रव्य आदि इसके उदाहरण हैं।

8. अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का सिद्धान्त
(THEORY OF INTERNATIONAL TRADE)

दो देशों में विदेशी व्यापार किसी कारण से होता है, इस विषय में एडम स्मिथ ने जो विचार व्यक्त किये थे वे आजकल 'अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का निरपेक्ष लाभ के सिद्धान्त' (Theory of Absolute Advantage) के नाम से विख्यात है। यह सिद्धान्त रिकार्डो के विख्यात तुलनात्मक लागत के सिद्धान्त (Theory of Comparative Cost) का आधार कहा जा सकता है। इस सिद्धान्त को संक्षेप में इस प्रकार लिखा जा सकता है :

दो देशों में किसी वस्तु का व्यापार का आधार उनके उत्पादन की लागतों की भिन्नता है। यह भिन्नता प्राकृतिक या मानवीय कारकों से हो सकती है। परिणाम यह होता है कि एक देश मुक्त व्यापार की दशा में उस वस्तु को उस देश से खरीदता है जहां वह सस्ती मिल सकती है, जबकि उसका निर्माण अपने देश में महंगा पड़ता है अर्थात् व्यापार का प्रवाह (Flow) सस्ते बाजार से महंगे बाजार को होता है।

9. आर्थिक विकास का विचार
(IDEAS OF ECONOIC DEVELOPMENT)

आत्म-हित का सिद्धान्त एडम स्मिथ का मूल दर्शन है। उन्होंने यह भी बताया है कि जब आत्म-हित में किसी प्रकार की बाधा उत्पन्न नहीं की जाती तो समाज में धन की वृद्धि होती है और आर्थिक विकास में प्रगति होती है? वे लिखते हैं :

"जब प्रत्येक व्यक्ति को अपनी दशा सुधारने की पूरी स्वतन्त्रता और सुरक्षा होती है तब उसकी स्वाभाविक क्रिया इतनी शक्तिशाली होती है कि बिना किसी अन्य शक्ति की सहायता के समाज को सम्पन्न और समृद्ध बना सकने में समर्थ होती है और उन सैकड़ों बाधाओं को भी पार कर जाती है जो मूर्खतापूर्ण मानवीय नियमों द्वारा उत्पन्न होती हैं।"

समाज में प्रत्येक मनुष्य अपने हित (आत्म-हित-Self-interest) से प्रकार होकर आर्थिक क्रियाएं करता है। वह अधिक से अधिक धन अर्जित करना चाहता है परन्तु इस कार्य को नियन्त्रित करने वाली एक अन्य शक्ति है....स्पर्धा (Competition)। यदि यह न हो तो पूरा समाज मुनाफा खोरों से भर जाय परन्तु स्पर्धा इस प्रवृत्ति का नियन्त्रण करती है। इसी के कारण वस्तुओं का मूल्य अधिक नहीं हो पाता और वस्तु भी उचित मूल्य पर प्राप्त हो जाती है और साथ ही समाज में सब वर्गों की आमदनी भी नियन्त्रित होती रहती है। यह सामान्य साम्य का सिद्धान्त है।

आर्थिक विकास का जो विचार एडम स्मिथ ने प्रस्तुत किया था। उसके अनुसार, आत्म-हित की प्रेरणा से संचालित मुक्त अर्थव्यवस्था स्वयं उत्तरोत्तर विकसित होती जाती है।

Scanned by PDF Scanner

एडम स्मिथ का मूल्यांकन

स्मिथ के सुप्रभाव

एडम स्मिथ के सिद्धान्तों की आलोचना हम यथास्थान कर चुके हैं। यहां उसके पूरे आर्थिक विचारों का सिंहावलोकन किया जा रहा है :

(1) स्मिथ ने तत्कालीन **बिखरे हुए आर्थिक सिद्धान्तों को एकत्रित किया** और इस प्रकार अर्थशास्त्र को एक सुसंगठित विज्ञान का रूप दिया।

(2) स्मिथ के विषय में शुम्पीटर ने कहा है कि यद्यपि उनका कोई विचार मौलिक नहीं था, परन्तु सभी सिद्धान्त का मूल उनके ग्रन्थ में पाया जाता है, यद्यपि यह कथन अतिशयोक्तिपूर्ण है कि उनमें मौलिकता ही नहीं थी। किसी विचार को आगे बढ़ा देना स्वयं मौलिक कार्य है और स्मिथ के इस प्रकार के कार्य कम नहीं है। स्मिथ ने **अनेक आधुनिक सिद्धान्तों को प्रारम्भ किया**। जनसंख्या का माल्थस का सिद्धान्त, रिकार्डो का लगान का सिद्धान्त, मिल का मजदूरी का सिद्धान्त, मांग-पूर्ति के सिद्धान्त तथा तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त आदि का मूल राष्ट्रों की सम्पत्ति में पाया जाता है। भले ही इसकी प्रेरणा उन्हें अन्य विचारकों से मिली हो।

(3) स्मिथ के विचारों पर ही मार्क्स के सिद्धान्त बनाये गये और एक अर्थ में वे **समाजवाद के जन्मदाता थे।**

(4) **मुक्त अर्थव्यवस्था का जनक** एडम स्मिथ को कहा जा सकता है। मुक्त अर्थव्यवस्था के पक्ष में उनके तर्क अभी तक लोकप्रिय हैं।

(5) स्मिथ के विचार उनके जीवन में ही लोकप्रिय हो गये और उनके जीवनकाल में ही उनके ग्रन्थ के पांच संस्करण हो गये। विदेशी भाषाओं में ही उसके अनुवाद निकले और पिट (Pitt) जैसे नेता भी उस मत से सहमत हुए। बाद के सभी अर्थशात्रियों के लिए **उनका ग्रन्थ अनिवार्य पाठ्य-पुस्तक के रूप में प्रचलित था।**

स्मिथ की दुर्बलताएं

स्मिथ के प्रधान दोष निम्नलिखित हैं :

(1) उनका **ग्रन्थ कुछ अस्त-व्यस्त ढंग से लिखा गया है**। जे. बी. से, जो उनके अनुयायी थे, लिखा था, "उनका ग्रन्थ सही विचारों का बिखरा हुआ संकलन है जिनको कुछ सत्यों के साथ लापरवाही से फेंक दिया गया है।"

(2) ग्रन्थ में **परस्पर विरोधी सिद्धान्तों का बाहुल्य है।** ग्रन्थ विचार-मन्थन को दिखाता है, परन्तु उसमें निश्चय का अभाव है।

(3) स्मिथ का अर्थशास्त्र **धर्मशास्त्र और दर्शन के प्रभाव से मुक्त नहीं** हो सका है।

(4) स्मिथ का **मूल सिद्धान्त यह है कि सहज ही शिव है' परन्तु यह सिद्धान्त अत्यन्त संदिग्ध है।** परिणामस्वरूप इस सिद्धान्त पर आधारित सभी मान्यताएं भी डगमगा जाती हैं।

(5) स्मिथ ने अर्थशास्त्र को **केवल व्यवस्थित रूप** दिया है, उन्होंने कोई ऐसा सिद्धान्त नहीं रखा जो पहले से ज्ञात न हो।

महत्वपूर्ण प्रश्न

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एडम स्मिथ के सहजवाद (Naturalism) तथा आशावाद (Optimism) के विचारों को संक्षेप में बताइए।

[**संकेत**—मूल दर्शन यह है कि समाज में जो अर्थव्यवस्था स्वयं सहज रूप से विकसित होती है वही समाज के लिए हितकर है। जो सहज है वह शिव (कल्याणकारी) है। इसको सिद्ध करने के लिए स्मिथ ने श्रम का विभाजन, मुद्रा, विनिमय, पूंजी, आदि का उदाहरण दिया है। परन्तु यह विचार अपूर्ण है।]

2. एडम स्मिथ के मूल्य सम्बन्धी सिद्धान्त समझाइए।

[**संकेत**—एडम स्मिथ ने दो प्रकार के मूल्य बताये हैं—उपयोग मूल्य (Value in use) तथा विनिमय मूल्य (Value in exchange)। दूसरा ही असली मूल्य है। उन्होंने मूल्य का लागत सिद्धान्त तथा मूल्य का श्रम सिद्धान्त दोनों का प्रतिपादन किया।]

3. एडम स्मिथ के विचारों को प्रभावित करने वाले घटकों का वर्णन कीजिए।

[**संकेत**—फ्रांसिस, हचेसन, डेविड ह्यूम, बर्नार्ड, मैण्डेविल प्रकृतिवाद, कुछ वणिकवादी जैसे विलियम पैटी, कैण्टीलोन तथा तत्कालीन परिस्थितियों का उन पर प्रभाव पड़ा।]

4. एडम स्मिथ के वितरण सम्बन्धी सिद्धान्त समझाइए।

Scanned by PDF Scanner

5. आर्थिक विचारों के क्षेत्र में एडम स्मिथ के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
6. आर्थिक विचारों के क्षेत्र में एडम स्मिथ के योगदान को स्पष्ट कीजिए। उन्हें अर्थशास्त्र का जनक क्यों कहा जाता है ?
7. एडम स्मिथ के श्रम-विभाजन विचार का मूल्यांकन कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एडम स्मिथ का करारोपण सिद्धान्त क्या है ?
2. एडम स्मिथ के आशावाद की धारणा को स्पष्ट कीजिए।
3. एडम स्मिथ की श्रम-विभाजन की अवधारणा क्या है ?
4. एडम स्मिथ के विनिमय मूल्य तथा उपयोग मूल्य को उदाहरण द्वारा समझाइए।
5. मजदूरी के सम्बन्ध में एडम स्मिथ की धारणा को बताइए।
6. एडम स्मिथ को अर्थशास्त्र का जनक क्यों कहा जाता है ?
7. मुक्त अर्थव्यवस्था से क्या अभिप्राय है ?
8. एडम स्मिथ के आर्थिक विकास के विचार को स्पष्ट कीजिए।

बहुविकल्पीय प्रश्न

निम्नलिखित में से सही विकल्प चुनिए :

1. एडम स्मिथ के अनुसार अर्थशास्त्र विज्ञान है :
   (A) धन का (B) वास्तविकता का
   (C) कल्याण का (D) इच्छाओं के लोप का
2. एडम स्मिथ द्वारा प्रतिपादित स्वतंत्र व्यापार का केन्द्र बिन्दु रहा है :
   (A) राजकीय नियंत्रण में कमी (B) मांग एवं पूर्ति की शक्ति
   (C) विदेशी सहयोग (D) श्रम-विभाजन
3. एडम स्मिथ ने अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के लाभों को समझाने के लिए किस प्रकार की लागत का प्रयोग किया है
   (A) निरपेक्ष लागत अन्तर (B) सापेक्ष लागत अन्तर
   (C) (A) तथा (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
4. 'दि वेल्थ ऑफ नेशन्स' के रचयिता थे :
   (A) एल्फ्रेड मार्शल (B) डेविड रिकार्डो
   (C) एडम स्मिथ (D) जे. एस. मिल
5. एडम स्मिथ के मौलिक विचार निम्नलिखित में से कौन है ?
   (A) सहजवाद (B) आशावाद
   (C) (A) तथा (B) दोनों (D) इनमें से कोई नहीं
6. एडम स्मिथ समर्थक थे :
   (A) आर्थिक क्रियाओं में सरकारी हस्तक्षेप नीति के
   (B) आर्थिक क्रियाओं में सरकारी अहस्तक्षेप नीति के
   (C) समय-समय पर सरकारी नियंत्रण एवं अहस्तक्षेप नीति के
   (D) उपर्युक्त में से कोई नहीं
7. एडम स्मिथ के सम्बन्ध में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?
   (A) 'दि वेल्थ ऑफ नेशन्स' का प्रकाशन 1776 में हुआ था।
   (B) एडम स्मिथ ने प्रकृतिवाद और आशावाद के बीच सम्बन्ध स्थापित किया था।
   (C) राज्य को आर्थिक क्रियाओं पर नियंत्रण रखना चाहिए।
   (D) एडम स्मिथ ने करारोपण के चार सिद्धान्तों को प्रतिपादित किया था।
8. 'अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार के निरपेक्ष लाभ के सिद्धान्त' के प्रतिपादक थे :
   (A) एडम स्मिथ (B) रिकार्डो
   (C) मार्शल (D) सैम्युल्सन

[उत्तर : 1. (A), 2. (D), 3. (A), 4. (C), 5. (C), 6. (B), 7. (C), 8. (A)]

Scanned by PDF Scanner